ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 19 कुल पृष्ठ-8 14 से 20 फरवरी, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 फा.कृ.-05

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में 8 से 10 फरवरी, 2019 तक

जनपदीय विराट आर्य महासम्मेलन का किया गया भव्य आयोजन

आध्यात्मिक उन्नति के बिना मनुष्य का विकास अधूरा है

– स्वामी आर्यवेश

वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करना आवश्यक है

– पं. माया प्रकाश त्यागी

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विगत 8 से 10 फरवरी, 2019 को जनपदीय विराट आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन दयानन्द स्मारक जूनियर हाई स्कूल धेदा, मुरादनगर, जिला–गाजियाबाद में किया गया। जिला सभा के यशस्वी प्रधान श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य ने बताया कि इस त्रिदिवसीय आर्य महासम्मेलन में आध्यात्मिक सम्मेलन, महिला सम्मेलन, शिक्षा एवं संस्कृति सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन एवं राष्ट्ररक्षा सम्मेलन आयोजित किये गये। इन सम्मेलनों में आर्य जगत् के शीर्षस्थ नेता, विद्वान, संन्यासी एवं भजनोपदेशकों ने अपने ओजस्वी विचारों से वैदिक मान्यताओं पर प्रकाश डालकर कार्यक्रम को अत्यन्त प्रभावशाली स्वरूप प्रदान किया।

कार्यक्रम में आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा पद को शम्भू दयाल आर्य संन्यास आश्रम के अध्यक्ष पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने सुशोभित किया और उन्होंने ही 8 फरवरी को प्रातः 10 बजे ध्वजारोहण के द्वारा इस आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन किया। महासम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी के अतिरिक्त स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल, आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री आगरा, कुमारी अंजलि आर्या करनाल एवं श्री दिनेश पथिक अमृतसर आदि विद्वान वक्ता, उपदेशकों ने अपने प्रवचन एवं भजनों के द्वारा श्रोताओं को ज्ञान गंगा में डुबकी लगवाई।

8 फरवरी, 2019 को आध्यात्मिक सम्मेलन की अध्यक्षता जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के संरक्षक श्री श्रद्धानन्द जी शर्मा ने की तथा श्री सत्यवीर चौधरी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद ने मंच संचालन किया। सम्मेलन के मुख्य वक्ता के रूप में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्वामी जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आध्यात्मिक उन्नति के बिना मनुष्य की उन्नति अधूरी है। जैसे शारीरिक उन्नति के लिए सात्विक एवं पौष्टिक भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार आत्मिक उन्नति के लिए अन्तःकरण की शुद्धि अत्यन्त आवश्यक है। मनु महाराज के अनुसार एक श्लोक में कहा गया है कि**अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति मनः सत्येन शुद्धयति। विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति।।** अर्थात् शरीर की शुद्धि जल से होती है, किन्तु मन की शुद्धि सत्य के आचरण से, विद्या के तप से आत्मा की उन्नति तथा ज्ञान प्राप्ति से बुद्धि की शुद्धि होती है। अतः यह स्पष्ट है कि जब तक मनुष्य सत्य आचरण, विद्या एवं तप के द्वारा ज्ञानवान नहीं होगा तब तक उसकी उन्नति अधूरी रहेगी और वह संसार में विशेष कार्य नहीं कर सकेगा। स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य के चित में पड़े हुए काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार आदि दोषों के संस्कार उसे सदैव पतन की ओर धकेलते हैं। अतः आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वाध्याय, साधना एवं सात्विक विचारों के द्वारा आत्मा की उन्नति करके समाज में व्यवहार करना चाहिए। इसी से उसकी यशः कीर्ति सभी मनुष्यों के बीच प्रतिष्ठित होती है। स्वामी आर्यवेश जी ने यह भी कहा कि अध्यात्म का मतलब कि ज्ञान को कर्म एवं आचरण में लाकर अपने व्यवहार को यम–नियमों के अनुसार ढालने को ही सही मायने में अध्यात्म कहा जा सकता है। इसके लिए महर्षि पतंजलि ने भी अष्टांग योग की पहली दो सीढ़ियाँ यम और नियम के रूप में निश्चित की हैं और यह स्पष्ट कर दिया है कि जब तक मनुष्य का संसार के प्रति व्यवहार अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के अनुरूप नहीं होगा तथा अपने प्रति व्यवहार शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान के अनुरूप नहीं होगा तब तक उसे कोई विशेष लाभ नहीं होने वाला है।

इस सम्मेलन में श्री दिनेश पथिक और कुमारी अंजलि आर्या के भजन तथा युवा विद्वान श्री हरिशंकर अग्निहोत्री का प्रभावशाली प्रवचन हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री अशोक गुप्ता को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

सायं 2.30 से 6 बजे तक महिला सम्मेलन हुआ जिसमें डॉ. मंजू सिवाच विधायक मोदीनगर, श्रीमती वंदना चौधरी, श्रीमती ममता दहिया, श्रीमती गीता शर्मा, श्रीमती बिन्दू त्यागी आदि ने अपने विचार रखे। मंच का संचालन डॉ. प्रतिभा सिंघल ने बड़ी कुशलता के साथ किया। इस अवसर पर जिला सभा की ओर से डॉ. मंजू सिवाच एवं प्रतिभा सिंघल को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

प्रार्थना और पुरुषार्थ

– डॉ. स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती

आजकल भारतवर्ष में भगवानों की कमी नहीं है। इनके आगे लोग पुराने भगवानों को भी भूल गए। राम और कृष्ण, ईसा और मुहम्मद भी पुराने पड़ गये। ये भगवान, ये आचार्य, ये योगेश्वर कहते हैं कि नए युग में अब पुराने भगवानों से काम नहीं चलेगा। पुराने भगवान अपने समय में बड़े रहे होंगे पर अब तो हममें दिव्य शक्ति है, हमारे चमत्कारों को देखो। तुम्हारा कल्याण हमसे होगा। हाड, मांस, मिट्टी के बने भगवानों के पीछे दुनिया पागल है। इससे बढ़कर नास्तिकता क्या होगी?

उस देव सविता के वरेण्य भर्ग को हम सब धारण करें और इसके निमित्त हम प्रभु से प्रार्थना करें कि 'वह हमारी बुद्धियों को प्रेरित करता रहे।' मनुष्य अन्य पशुओं से इस प्रकार भिन्न है कि प्रभु ने उसे बुद्धि दी है। बुद्धि इसलिए दी है कि वह सत् और असत् में विवेक करावे। सदसद् विवेकवती बुद्धिः। बुद्धि का प्रयोग करने में मनुष्य स्वतंत्र है। पशुओं को यह स्वतंत्रता अल्पमात्रा में ही प्राप्त है, परन्तु मनुष्य को यह स्वतंत्रता प्राप्त है कि सत् के लिए बुद्धि का प्रयोग करे अथवा असत् के लिए। अपनी बुद्धि का प्रयोग करे ही न, दूसरे की बुद्धि से काम लेता रहे – इसकी भी उसे स्वतंत्रता है – एक भेड़ जिधर चल दी, सब भेड़ें चल दीं – ऐसा तो कुछ–कुछ पशुओं में भी होता है। पर मनुष्य के लिए विवेक बड़ा आवश्यक है। हमारी बुद्धि को जब प्रभु प्रेरणा देता है, तब वह हमें कल्याण के मार्ग पर ले जाती है। जब शैतान इसको प्रेरणा देने लगता है तो बुद्धि हमें छल, कपट, द्वेष, मिथ्याभिमान, चोरबाजारी और स्वार्थमय क्रूरताओं की ओर ले जाती है।

परमात्मा से सद्बुद्धि की प्रार्थना करनी चाहिए। परमात्मा के पास सब कुछ है पर हम उससे क्या मांगें? यह हमें स्वयं सोचना पड़ेगा। उसके भर्ग की (ज्ञान और आनन्द के भण्डार की) कोई सीमा नहीं है पर हमें इसमें से अपने लिए कुछ चुन लेना पड़ेगा। इसी का नाम वरेण्यं भर्गः है। अगर तुम संगीतज्ञ होना चाहो तो संगीत कला प्रभु से मांगो। शास्त्रों के पण्डित होना चाहो तो प्रभु से पाण्डित्य की प्रार्थना करना आरम्भ करो। भले आदमी बनना चाहते हो तो इसके लिए याचना करो। सोच लो तुम प्रभु से क्या मांगना चाहते हो। यह है – वरेण्यं भर्गः।

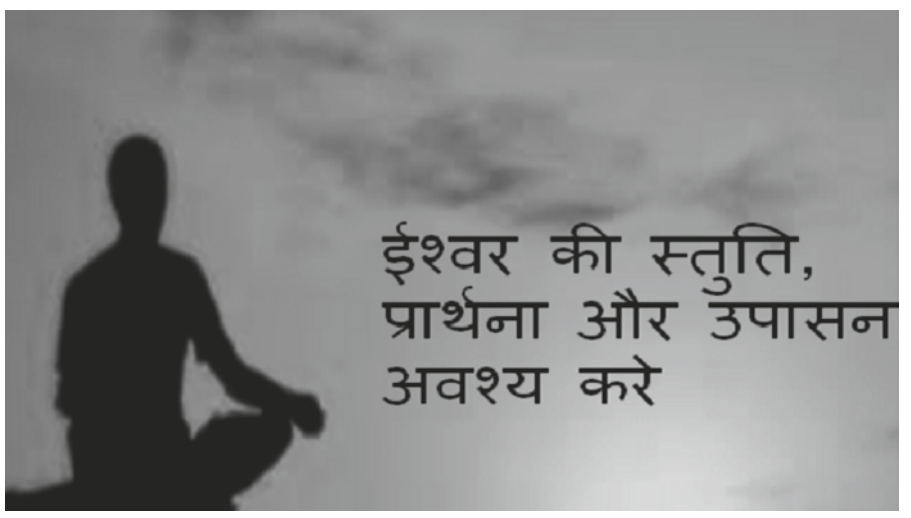

मुंह से कहने मात्र से प्रभु तुम्हारी बुद्धि को उस ओर प्रेरित नहीं कर देगा। तुमसे तपस्या करायेगा। जिस क्षेत्र में तुम तपस्या करोगे, उसी क्षेत्र में प्रभु बुद्धियों को प्रोत्साहित करेगा। आइन्सटाइन ने भौतिक शास्त्र के क्षेत्र में तपस्या की, परमात्मा ने उसकी बुद्धि को उस क्षेत्र में प्रखर और तीव्र बनाया। दयानन्द ने वेद के पाण्डित्य के क्षेत्र में तपस्या की, प्रभु ने उस क्षेत्र में दयानन्द को नया प्रकाश दिया। अगर संगीत के क्षेत्र में तुम तपस्या करने को तैयार नहीं हो तो गायत्री के पाठ मात्र से तुम्हें फल नहीं मिलेगा।

यह याद रखना कि वेद की ऋचाओं का प्रादुर्भाव प्रभु से हुआ है। प्रभु की समस्त रचना उत्कृष्ट श्रेणी की है। वेद के सभी मन्त्र एक समान ही पवित्र और श्रेष्ठ हैं। यह मत कहना कि गायत्री मंत्र सब मंत्रों से अधिक पवित्र हैं। यह भी मत समझना कि गायत्री मन्त्र का जाप बिना तपस्या के तुम्हें फल देगा। जाप जबान से नहीं होता। जाप तो हृदय से और दृढ़ संकल्प से होता है।

यह भी स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य तुच्छ तपस्या और साधारण प्रयास करता है। पर प्रभु का प्यार पा ले तो मनुष्य के द्वारा असाधारण कार्यों का सम्पन्न होना सम्भव हो जाता है। हम अपने लिए थोड़ा सा ही करते हैं, और प्रभु हमारे लिए बहुत कुछ करता है – पर थोड़ा सा काम हमसे करवा लेता है। तुम्हारे घर में आम का पेड़ है। तुम अपने को उसका मालिक समझते हो। तुम्हारी जमीन है, तुमने उगाया – पर यह भूल जाओ कि धरती तुम्हारी है। तुमने केवल इतना ही किया है कि थोड़ी सी मिट्टी खोदी, उसमें कुछ खाद डाल दी, बीज को मिट्टी के भीतर छिपा दिया(वह बीज जिसे तुमने नहीं बनाया) कुछ पानी दिया और कभी–कभी थोड़ी सी रखवाली कर ली। बस इतना ही तो तुमने किया। इस बात को तुम क्यों भूल जाते हो कि धरती में तुमने जब बीज छिपा दिया था, तो कौन उस बीज में बैठा हुआ, एक छोटा अंकुर निकाल देता है? कौन उस अंकुर को पालता पोषता है? उसे बड़ा करता है उसमें पत्ते निकलते हैं। पेड़ पर फूल आता है। फूल में से फल निकलना प्रारम्भ हो जाता है। यह है प्रभु की जादूगरी और चमत्कार! (इस चमत्कार के आगे समस्त बाबाओं और पैगम्बरों के छल कपट से भरे चमत्कार फीके हैं।) तुमने तो बीज बोने का थोड़ा सा पुरुषार्थ किया, बाकी तो सारा काम प्रभु का है।

तुमने रात को कुछ रोटी खाई, कुछ दूध पिया। तुमने थोड़ा सा ही काम किया –मुंह खोला और हाथ से उठाकर खाने को पेट के भीतर खिसका दिया। खा पीकर तुम सो गए। तुम्हें तो पता भी नहीं होता कि कौन सा रसोईया तुम्हारी रोटी के टुकड़े से क्या–क्या तैयार करता है! प्रभु की कृपा तुम्हारी रोटी को पीस–पीस करके अनगिनती पदार्थ बनाती है, जो रुधिर के मार्ग से तुम्हारे शरीर में चक्कर लगाते हैं। यह रुधिर भोजन का कुछ अंश आंखों की पुतली में पहुंचाता है। कुछ तुम्हारी हड्डियों या पेशियों में पहुंचता है। शरीर के जिस अंग को जिस द्रव्य की जितनी आवश्यकता है, प्रभु चुपके से वहां पहुंचा देता है। तुम तो सोते रहे, तुम्हें तो पता भी न चला। कब क्या बना और कैसे कहां पहुंच गया। इसीलिए मैं कहा करता हूँ कि आदमी तो अपने लिए बहुत कम करता है। प्रभु उससे थोड़ा सा करवा तो लेता है पर बाद को वह स्वयं इस कार्य को सम्पन्न करता है। प्रभु की इस व्यवस्था में जिसे विश्वास नहीं, वही तो मारा मारा भटकता फिरता है। अकेले प्रभु पर भरोसा रखो, बाकी सब भरोसे झूठे हैं, बेमतलब हैं।

एतदालम्बनं श्रेष्ठं एतदालम्बनं परम्।

प्रभु के आलम्बन से बढ़कर और कोई आलम्बन नहीं। प्रभु का आलम्बन छोड़ दिया तो दर–दर के भिखारी बनोगे। बाबाओं, देवियों, माताओं और भगवानों के चक्कर में फंसोगे। आजकल भारतवर्ष में भगवानों की कमी नहीं है। इनके आगे लोग पुराने भगवानों को भी भूल गए। राम और कृष्ण, ईसा और मुहम्मद भी पुराने पड़ गये। ये भगवान, ये आचार्य, ये योगेश्वर कहते हैं कि नए युग में अब पुराने भगवानों से काम नहीं चलेगा। पुराने भगवान अपने समय में बड़े रहे होंगे पर अब तो हममें दिव्य शक्ति है, हमारे चमत्कारों को देखो। तुम्हारा कल्याण हमसे होगा। हाड, मांस, मिट्टी के बने भगवानों के पीछे दुनिया पागल है। इससे बढ़कर नास्तिकता क्या होगी?

भगवान् हमारा घट–घट व्यापी है। उसके देने के तरीके निराले हैं। वह सुख की वर्षा ऊपर से नहीं करता है। वह तुम्हारे अन्तःकरण में है। बाहर की आंखें मूंदो और भीतर की ओर देखो। परमात्मा जब कुछ तुम्हें देगा, तो वह तुम्हारे माध्यम से ही देगा। अगर उससे तुमने सच्चे हृदय से धन की प्रार्थना की है तो वह तुम्हारे घर में रुपयों की बोरियाँ ऊपर से नहीं बरसायेगा – वह तुमसे ही परिश्रम करायेगा और धन कमाने की तुम्हारी योग्यता बढ़ा देगा। अगर परीक्षाएं उत्तीर्ण करना चाहते हो तो वह झूठ के द्वारा परीक्षा में नकल करवा के उत्तीर्ण नहीं करवायेगा, वह अध्ययन के प्रति तुम्हारी बुद्धि को प्रेरित करेगा और तुम सफल हो जाओगे।

यह सदा याद रखना कि तुम्हारे पास जो धन आ रहा है वह भगवान का दिया है या शैतान का। तरह–तरह के जुए और लाटरी से कमाया हुआ धन शैतान का है। यह चोरी का धन है, ऐसा समझना चाहिए। आज सभी देशों में जुए से कमाने की आदत पड़ गई है। भारत में भी देखो कि सरकारें जुए का प्रबन्ध करती हैं। आज उत्तर प्रदेश की लाटरी, आज पंजाब की, आज हरियाणा की! युधिष्ठिर ने जुआ खोला था, भारत नष्ट हो गया। आज सरकारें जुआ खिला रही हैं इसका परिणाम विनाश और दुःख होगा।

सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि कृत सर्वशुद्ध द्वितीय संस्करण द्वारा मुद्रित है अर्थात् 37वां संस्करण के अनुसार प्रकाशित है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश सर्वशुद्ध, द्वितीय संस्करण के अनुसार 20x30 के 8वें के बड़े साईज में कम्प्युटर द्वारा मुद्रित होकर तैयार है। पृष्ठ संख्या 432 रेक्सिन वाली जिल्द, लेमिनेशन वाला आकर्षक टाईटिल है।

प्रत्येक अक्षर मोतियों जैसा पठनीय है। कागज भी मजबूत और ग्लेज है।

मूल्य – अजिल्द – 160/– रुपये, सजिल्द – 225/– रुपये, डाक से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

महर्षि दयानन्द कृत व्यवहारभानु – एक झलक

– डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री

महर्षि के अनुसार शिक्षा का अर्थ किताबें रटना नहीं है, बल्कि शुभ गुण अर्जित करना है। विद्या कहते ही उसे हैं जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत जाना जाए और फिर उसका उपयोग करके अपने लिए एवं दूसरों के लिए सुख की सिद्धि की जाए। यह क्रिया चार चरणों में सम्पन्न होती है– आगम (ध्यान देकर पढ़ाने वाले से विद्या ग्रहण करना), स्वाध्याय (जो कुछ पढ़ा उसे एकान्त में स्वस्थ चित्त होकर हृदय में दृढ़ करना), प्रवचन (पढ़ी हुई सामग्री दूसरों को प्रीतिपूर्वक पढ़ा सकना) और व्यवहारकाल (जो कुछ सीखा है उसके अनुरूप आचरण करना)। इसे ही कुछ विद्वानों ने श्रवण (सुनना), मनन (पढ़ी हुई सामग्री पर चिन्तन करना), निदिध्यासन (जो कुछ पढ़ा–सुना है, उसकी विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना) और साक्षात्कार (सीखे हुए ज्ञान को क्रिया से प्रत्यक्ष करना) कहा है। महर्षि ने विद्या में शुद्ध वर्णोच्चारण, व्यवहार की शुद्धि, पुरुषार्थ, धार्मिक विद्वानों के संग, विषयकथाप्रसंग के त्याग, सुविचार आदि पर विशेष बल दिया है और विभिन्न विद्याओं से सम्बन्धित जो सत्यग्रन्थ हैं उनके अध्ययन की प्रेरणा दी है ताकि फिर व्यक्ति वेद आदि साध्य ग्रन्थों के अर्थ जान सके और स्वयं धार्मिक बनकर धार्मिकता का प्रसार करे ।

महर्षि दयानन्द (1825–1883) के समस्त साहित्य में व्यवहारभानु पुस्तक (प्रथम संस्करण 1879 ई.) का अलग स्थान है। यों तो स्वामी जी ने समस्त साहित्य गंभीर शैली में लिखा है, पर लगभग पचास पृष्ठ की यह एकमात्र ऐसी पुस्तक है जिसमें उन्होंने दृष्टान्तों, उदाहरणों, कहानियों, लोककथाओं आदि का खुलकर उपयोग करके इसे रोचक शैली में लिखा है। 'अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा' वाली उस लोककथा का भी इसमें उपयोग किया गया है जिस पर हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850–1885) ने बाद में 'अंधेर नगरी' (1881 ई.) नाम से एक नाटक भी लिखा था। महर्षि ने यह पुस्तक प्रश्नोत्तर, संवाद और व्याख्यान की मिश्रित शैली में मूलतः हिन्दी में लिखी थी, जो पर्याप्त लोकप्रिय हुई। हिन्दी में तो उसके अनेक संस्करण छपे ही, गुजराती, बांग्ला, उड़िया, मलयालम, संस्कृत आदि भारतीय भाषाओं के साथ ही उसका अंग्रेजी में भी अनुवाद हुआ।

महर्षि ने इसे 'पठन–पाठन व्यवस्था की पुस्तक' कहा है। पठन–पाठन शब्द सुनते ही हमें विद्यालय की याद आ जाती है जहाँ शिक्षक मुख्य रूप से औपचारिक पठन–पाठन कराता है। हम यह भूल जाते हैं कि पठन–पाठन औपचारिक तो बाद में होता है, सबसे पहले अनौपचारिक होता है, जिसकी शुरुआत माता से हो जाती है, और फिर इसके सूत्र परिवार में पिता एवं अन्य सदस्यों, मित्रों, सम्बन्धियों, परिचितों–अपरिचितों आदि से होते हुए बहुत दूर तक जाते हैं। वास्तविकता यह है कि यह आजीवन चलता रहता है। इसलिए अपने विशिष्ट अर्थ में इसका महत्व औपचारिक पठन–पाठन से भी अधिक होता है। इस पुस्तक में महर्षि ने अनौपचारिक पठन–पाठन से सम्बन्धित छोटी–बड़ी बातों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है, और प्रसंगवश, यत्र–तत्र औपचारिक पठन–पाठन की भी चर्चा की है। अतः इस पुस्तक का सम्बन्ध हर बच्चे से और बच्चों के सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति से है। महर्षि के शब्दों में, उन्होंने इस पुस्तक में 'बालक से ले के वृद्ध पर्यन्त मनुष्यों के सुधार के अर्थ व्यवहार सम्बन्धी शिक्षा का विधान किया' है।

इस पुस्तक में यह बताया गया है कि परिवार में माता–पिता और संतान, विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी, प्रशासन में शासक और शासित, राजनीति में नेता और जनता, बाजार में क्रेता और विक्रेता आदि विभिन्न रूपों में हमें किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, और इसके लिए जो गुण अपेक्षित हैं, उनका अर्जन कैसे किया जा सकता है। आज इन सभी सम्बन्धों में जो विकृतियाँ आई हैं, उन्हें देखते हुए इस पुस्तक का महत्व और भी बढ़ गया है।

माता–पिता और आचार्य के दायित्व : संतान को योग्य बनाना किसी एक व्यक्ति का काम नहीं। यह कार्य तभी सम्पन्न हो सकता है जब माता–पिता और आचार्य तीनों अपने–अपने दायित्वों का सम्यक पालन करें। इसकी शुरुआत माता–पिता से होती है, और इसकी तैयारी गर्भाधान से पहले ही शुरू हो जाती है, गर्भ के दौरान चलती रहती है और बच्चे के जन्म के बाद विभिन्न रूप धारण कर लेती है।

सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास के प्रारम्भ में महर्षि ने शतपथ ब्राह्मण का जो वाक्य उद्धृत करते हुए लिखा है कि जब माता, पिता और आचार्य तीनों उत्तम शिक्षक होते हैं, तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है, उसका यहाँ भी उल्लेख किया है। ये तीनों लोग अपनी भूमिका ठीक ढंग से किस प्रकार निभा सकते हैं, इस पुस्तक में वह अच्छी तरह स्पष्ट किया गया है।

माता–पिता और आचार्य का दायित्व है कि बच्चों को शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करने, गाली–गलौज आदि अपशब्दों से रहित शिष्ट भाषा बोलने, अनर्गल बातें न करने, खाने–पीने, उठने–बैठने, वस्त्रधारण करने, माता–पिता आदि का सम्मान करने, उनके सामने अपना मनमाना व्यवहार न करने, विरुद्ध चेष्टा न करने आदि का उपदेश करें। कई बार माता–पिता अपने लाड़–प्यार में बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार करने लगते हैं जो उचित नहीं। कभी बाल–क्रीड़ा का आनन्द लेने के लिए कहते है कि इसके बाल खींच लो, इसके कपड़े छीन लो, या मानों उन्हें 'साहसी' बनाने के लिए कहते हैं, इसने तुम्हें गाली दी, तुम भी गाली दो, इसने तुम्हें मारा, तुम भी उसे मारो। वे भूल जाते हैं कि इससे बच्चा असभ्य और अनुशासनहीन बनेगा। ऐसे ही कभी कहते हैं कि जल्दी से तुम्हारी शादी कर देंगे। उनका ध्यान नहीं जाता कि बच्चे को शादी योग्य बनने से पहले ब्रह्मचर्य आश्रम की तपस्या करनी है, अतः उसे इस आश्रम का पालन करने योग्य बनने की प्रेरणा देनी चाहिए, न कि उससे विरत होने की। इसीलिए महर्षि ने ऐसी सब बातों को 'कुशिक्षा' कहा है और ऐसी शिक्षा देने वालों को 'संतान का शत्रु, कुमाता, कुपिता' बताया है। उनके अनुसार माता–पिता का कर्तव्य है कि बच्चों को हमेशा सद्गुणों का उपदेश करें, कर्तव्य पालन की प्रेरणा दें, धर्म–अधर्म, सच–झूठ का अंतर समझाएँ, पाखण्ड का खंडन करें, वेद–शास्त्र आदि का यथावत् ज्ञान कराएँ, इनके वचन कंठस्थ कराएँ, ईश्वर की उपासना करना सिखाएँ आदि।

बाल्यावस्था मानव जीवन का अत्यन्त मूल्यवान समय है, इसे नष्ट न होने दें। इसके एक–एक क्षण का सदुपयोग करें।

व्यक्ति को योग्य बनाने में माता–पिता के समान ही शिक्षकों और उपदेशकों की भूमिका है।

उनमें कतिपय विशिष्ट गुण होने चाहिए तभी वे अपने दायित्वों का सम्यक् निर्वाह कर पाएँगे। उनसे अपेक्षित है कि वे ज्ञानी हों, वेद सहित विभिन्न विषयों के ज्ञाता हों, पर अभिमानी न हों। अत्यन्त प्रेम से धर्मयुक्त व्यवहार करने वाले हों। आवश्यक होने पर कठोर व्यवहार भी करें, पर यह कठोरता ऊपर से ही हो, भीतर से कृपादृष्टि बनी रहे। शान्त होकर प्रश्नों के उत्तर देने वाले हों। जिन बातों को नहीं जानते, उन्हें भी तर्क के माध्यम से शीघ्र जानने–समझने की योग्यता वाले हों। कोरे ज्ञानी नहीं, बल्कि पठित ज्ञान के अनुरूप आचरण करने वाले हों, अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा एकरूप व्यवहार करते हों। उनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक आदि दुर्गुण न हों। वे आलसी न हों, परिश्रमी हों। सुख–दुःख सब बर्दाश्त करें, पर किसी भी लालच से धर्म का त्याग न करें। अपनी सामर्थ्य का विचार किए बिना बड़े–बड़े मनोरथ करने वाले या बिना परिश्रम के बड़े–बड़े कामों की इच्छा करने वाले, अपनी–दूसरों की अनावश्यक प्रशंसा करने वाले मूढ़ बुद्धि न हों। पढ़ाते समय शिक्षक ऐसी रीति अपनाएँ जिससे विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ता जाए। दृष्टान्त देकर, क्रियात्मक काम करके, यंत्रों का उपयोग करके, कलाकौशल, विचार आदि का ऐसा प्रयोग करें जिससे विद्यार्थी एक के जानने से हजारों अन्य पदार्थ यथावत् जान जाएँ। बुद्धि को बढ़ाने वाली क्रियाओं का अभ्यास कराएँ जिससे सत्य धर्म के प्रति निष्ठा विकसित हो।

संतान के गुण : जिस प्रकार माता–पिता और शिक्षकों से कुछ गुण अपेक्षित हैं, उसी प्रकार बच्चों, विद्यार्थियों से भी अपेक्षा है कि वे सच बोलें, सरल रहें, अभिमान न करें, निष्कपट रहें, आज्ञापालन करें, शान्त रहें, निन्दा न करें, चपलता न करें, माता, पिता, अध्यापक से ऊँचे आसन पर न बैठें, नीचे बैठें,

शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य समाज करनाल रोड, कैथल में
श्री सत्यवीर आर्य के सेवा निवृत्त होने के उपलक्ष्य में विशेष कार्यक्रम हुआ आयोजित
सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की अध्यक्षता

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ता एवं नेहरू युवा केन्द्र में सेवारत श्री सत्यवीर आर्य के सेवा निवृत्त हो जाने पर कैथल की विभिन्न आर्य समाजों एवं आर्य संगठनों ने सामूहिक रूप से परिवार मिलन समारोह के रूप में एक भव्य कार्यक्रम आर्य समाज करनाल रोड, कैथल में आयोजित किया। 9 फरवरी, 2019 को आयोजित इस विशेष कार्यक्रम की अध्यक्षता के लिए स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से पधारे।

कार्यक्रम में स्वामी जी के अतिरिक्त स्वामी रामवेश जी, श्री जसविन्द्र आर्य भजनोपदेशक, श्री यशवीर योगाचार्य आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का मंच संचालन आर्य समाज के पुरोहित श्री कृष्ण चन्द्र शास्त्री ने किया। इस कार्यक्रम में शहर की सभी आर्य समाजों के अधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे। उनके अतिरिक्त आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्ता भी उत्साह के साथ सम्मिलित हुए थे। श्री सत्यवीर सिंह आर्य को शॉल एवं पगड़ी भेंटकर स्वामी आर्यवेश जी ने सम्मानित किया। इस अवसर पर उन्हें साहित्य भी भेंट किया गया। अन्य स्वागत करने वालों में आर्य समाज के प्रधान श्री प्रीतपाल कालड़ा, मंत्री श्री हरिकेश रावेश, शहर आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती रजनी आर्या, नेहरू युवा केन्द्र के पूर्व निदेशक श्री जयपाल सिंह मलिक, मा. श्यामलाल आर्य, श्री अमित गुप्ता, श्री सज्जन सिंह आर्य, श्री योगेन्द्र कुमार, श्री सत्यवान मलिक आदि ने माल्यार्पण द्वारा उनका सम्मान किया। श्री सत्यवीर जी की धर्मपत्नी श्रीमती जगमति मलिक का भी महिलाओं ने माल्यार्पण द्वारा विशेष सम्मान किया। आर्य समाज के पदाधिकारियों ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए श्री सत्यवीर आर्य को अपनी शुभकामनाएं प्रस्तुत की। आर्य समाज की ओर से श्री हरिकेश रावेश एवं प्रधान श्री प्रीतपाल ने शॉल देकर उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम के पश्चात् प्रीतिभोज की भी सुन्दर व्यवस्था श्री सत्यवीर आर्य के परिवार की ओर से की गई थी। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

पृष्ठ 1 का शेष

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में 8 से 10 फरवरी, 2019 तक
जनपदीय विराट आर्य महासम्मेलन का किया गया भव्य आयोजन

9 फरवरी, 2019 को प्रातः यज्ञ के उपरान्त शिक्षा एवं संस्कृति सम्मेलन आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता मा. रामदेव वर्मा सिरौरा ने की। सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी, उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षामंत्री श्री बालेश्वर त्यागी जी, श्री बबली कसाना, श्री हुकम सिंह दरोगा एवं श्री आर.के. आर्य–भूड़ आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने कहा कि वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए वर्तमान दूषित शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करना नितान्त आवश्यक है। उन्होंने बताया कि शिक्षा में जब तक संस्कार प्रशिक्षण पर विशेष बल नहीं दिया जायेगा तब तक बच्चों का सर्वतोमुखी विकास नहीं हो सकता। साक्षर ज्ञान मात्र से व्यक्ति की उन्नति नहीं होती, जब तक उसे संस्कारित भी न कर दिया जाये तब तक शिक्षा अधूरी रहती है। प्राचीन समय में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के माध्यम से बच्चों को शिक्षित एवं संस्कारित किया जाता था जिससे उनका सर्वांगीण विकास होता था। आज उसकी नितान्त कमी दिखाई दे रही है।

मध्यान्ह 12.30 से 1.30 बजे तक बाल ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें श्री सुरेन्द्र पाल सिंह अध्यक्ष एवं श्री जयपाल सिंह आर्य तथा श्री सत्यपाल सिंह आर्य सदस्य थे। मध्यान्ह 2.30 से 6 बजे तक समाज सुधार सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री जयपाल सिंह सिहानी ने की। मंच का संयोजन डॉ. वीरपाल विद्यालंकार ने बड़ी कुशलता के साथ किया। सम्मेलन में युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं युवा विद्वान आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री जी के ओजस्वी व्याख्यान हुए। 10 फरवरी, 2019 को प्रातः 8 से 9.30 बजे तक 11 कुण्डीय यज्ञ स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात् राष्ट्ररक्षा सम्मेलन एवं सम्मान समारोह के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता जिला सभा के प्रधान श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य ने की तथा जिला सभा के मंत्री श्री कृष्ण देव आर्य ने मंच संचालन किया। सम्मेलन में श्री बी.सी. बंसल एडवोकेट, श्री गोपाल अग्रवाल, डॉ. भीम सिंह, श्री जय प्रकाश आर्य आदि ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर गणमान्य महानुभावों का स्वागत भी किया गया। प्रधानाचार्य श्री चन्द्रशेखर आर्य का सम्मान 9 फरवरी, 2019 को ही कर दिया गया था।

इस त्रिदिवसीय आर्य महासम्मेलन में आयोजित विविध सम्मेलनों को आमंत्रित वैदिक विद्वानों श्री आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री, स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि के व्याख्यान एवं श्री दिनेश पथिक तथा कुमारी अंजलि आर्या के भजनों का कार्यक्रम निरन्तर चलता रहा। जनपदीय आर्य महासम्मेलन की व्यवस्था में जहाँ जिला सभा के प्रधान श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, मंत्री श्री कृष्ण देव आर्य, कोषाध्यक्ष श्री उमेन्द्र चन्द्र दत्त ने अथक परिश्रम किया वहीं आर्य समाज आयुध निर्माणी मुरादनगर के प्रधान श्री वीरेन्द्र सिंह सिरोही, कोषाध्यक्ष श्री लटूर सिंह तथा समस्त सदस्यों ने सम्मेलन की व्यवस्था में अपना भरपूर योगदान किया।

आर्य राष्ट्र बनायेंगे

संसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ

अद्यः जीवानि माश्वः

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
अपघ्नन्तो अरावणः।।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

बलमुपास्व्

स्वामी इन्द्रवेश

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

एवं

आर्य राष्ट्र के शंखनाद राजधर्म 'मासिक' पत्रिका की

स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर भव्य

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक : 9, 10 मार्च, 2019 (शनिवार, रविवार)

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

आप सादर सपरिवार आमंत्रित हैं।

अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनायें।

समारोह के मुख्य आकर्षण

- 27 फरवरी, 2019 से प्रारम्भ होने वाले चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति 9 मार्च, 2019 को प्रातः 10 बजे होगी।
- स्वर्ण जयन्ती समारोह का मुख्य कार्यक्रम 10 मार्च, 2019 को प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक होगी।
- सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के 50 वर्ष की गतिविधियों की चित्रमय झांकी, चित्र प्रदर्शनी, डाक्यूमेंटरी भी दिखाई जायेगी।
- परिषद् की स्मारिका प्रकाशित होगी।
- राजधर्म के 50 वर्ष के सभी अंकों में से सामयिक एवं विचारोत्तेजक लेखों का संग्रह करके विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा।
- परिषद् के संस्थापक सदस्यों, पदाधिकारियों, व्यायाम शिक्षकों, कार्यकर्ताओं व विशेष सहयोगियों को सम्मानित किया जायेगा।
- परिषद् का भावी रचनात्मक कार्यक्रम घोषित किया जायेगा।

स्वामी आर्यवेश
प्रधान

बिरजानन्द
महामंत्री

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा

9416630916, 9354840454, 9468165946

पृष्ठ 3 का शेष

महर्षि दयानन्द कृत व्यवहारभानु – एक झलक

ताड़ना पर क्रोध न करें, उनकी बात ध्यान देकर सुनें। शरीर, वस्त्र और अपना परिवेश साफ रखें। जो प्रतिज्ञा करें उसे पूरा करें। उपकार को मानें। आलसी न हों, पुरुषार्थी बनें।

काम–क्रोध–लोभ–मोह–भय आदि विद्या–विरोधी दुर्गुणों को छोड़कर उत्तम गुण अपनाएँ। नशे के पदार्थ बुद्धि का नाश करते हैं, अतः वे कभी ग्रहण न करें। नियमित रूप से योगाभ्यास करें। ब्रह्मचर्य का पालन करके जितेन्द्रिय बनें और धर्मयुक्त आचरण करें। बड़ा होने पर माता–पिता आदि की सेवा अवश्य करें क्योंकि बाल्यावस्था में वे ही पालन पोषण एवं शिक्षण करते हैं, अतः उनकी सेवा करना परम धर्म है।

शिक्षा का अर्थ और महत्व : महर्षि के अनुसार शिक्षा का अर्थ किताबें रटना नहीं है, बल्कि शुभ गुण अर्जित करना है। विद्या कहते ही उसे हैं जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत जाना जाए और फिर उसका उपयोग करके अपने लिए एवं दूसरों के लिए सुख की सिद्धि की जाए। यह क्रिया चार चरणों में सम्पन्न होती है– आगम (ध्यान देकर पढ़ाने वाले से विद्या ग्रहण करना), स्वाध्याय (जो कुछ पढ़ा उसे एकान्त में स्वस्थ चित्त होकर हृदय में दृढ़ करना), प्रवचन (पढ़ी हुई सामग्री दूसरों को प्रीतिपूर्वक पढ़ा सकना) और व्यवहारकाल (जो कुछ सीखा है उसके अनुरूप आचरण करना)। इसे ही कुछ विद्वानों ने श्रवण (सुनना), मनन (पढ़ी हुई सामग्री पर चिन्तन करना), निदिध्यासन (जो कुछ पढ़ा–सुना है, उसकी विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना) और साक्षात्कार (सीखे हुए ज्ञान को क्रिया से प्रत्यक्ष करना) कहा है। महर्षि ने विद्या में शुद्ध वर्णोच्चारण, व्यवहार की शुद्धि, पुरुषार्थ, धार्मिक विद्वानों के संग, विषयकथाप्रसंग के त्याग, सुविचार आदि पर विशेष बल दिया है और विभिन्न विद्याओं से सम्बन्धित जो सत्यग्रन्थ हैं उनके अध्ययन की प्रेरणा दी है ताकि फिर व्यक्ति वेद आदि साध्य ग्रन्थों के अर्थ जान सके और स्वयं धार्मिक बनकर धार्मिकता का प्रसार करे ।

कुछ लोग शिक्षाद्वेषी होते हैं वे सोचते हैं कि पढ़–लिखकर क्या करना? मरना तो सबको है, चाहे पढ़ो या न पढ़ो। ऐशो–आराम से जीना हमारा उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए पैसा चाहिए, पढ़ाई किसी काम की नहीं। देखो न, अनेक पढ़े–लिखे लोग दरिद्र होते हैं और अनपढ़ धनवान होते हैं। धन पर अनावश्यक बल देने वाली इस मानसिकता से समाज का बहुत अहित हुआ है। विद्या की उपेक्षा करने के कारण ही अज्ञान फैला, अंधविश्वास का अंधकार घिर गया, कुरीतियों–कुप्रथाओं ने जकड़ लिया। महर्षि ने विद्या का महत्व बताते हुए कहा है कि विद्या का प्रयोजन यह नहीं है कि इससे जन्म–मरण जैसा ईश्वरीय नियम बदल जाएगा।

मानव जीवन का उद्देश्य भी केवल ऐशो–आराम से जीना नहीं है, बल्कि मानव जीवन के चार उद्देश्य हैं–

धर्म–अर्थ–काम और मोक्ष की सिद्धि। विद्या से ही हमें इन चारों का यथावत् ज्ञान होता है और इनकी सिद्धि के उपायों की जानकारी मिलती है।

शिक्षा सबके लिए : पहले अनेक लोग यह मानते थे (आज भी कुछ लोगों में इस मान्यता के अवशेष देखे जा सकते हैं) कि शिक्षा केवल सवर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों) के लिए आवश्यक है, शूद्रों के लिए नहीं, और स्त्रियाँ चाहे सवर्ण हों या असवर्ण, उन्हें तो पढ़ाना ही नहीं चाहिए क्योंकि वेदों में ऐसा कहा गया है (स्त्री शूद्रौ ना धीयताम् इति श्रुतेः)। महर्षि ने इस मान्यता का खण्डन किया और बताया कि वेद के नाम पर यह नितान्त झूठी बात कही जाती है। वेदों में ऐसा कहीं नहीं कहा गया है, बल्कि वहाँ तो सबके लिए शिक्षा आवश्यक बताई है। तर्क से भी यही सिद्ध होता है कि शिक्षा सबको मिलनी चाहिए ताकि सभी लोग धार्मिक (अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा श्रेष्ठ आचरण करने वाले) बनें। यह सच है कि विशेष अध्ययन करके विद्वान् तो कुछ ही लोग बनेंगे, पर धार्मिक तो सब लोगों को बनना चाहिए। यहाँ महर्षि ने धार्मिक का विशिष्ट अर्थ में प्रयोग किया है। उनका आशय है (क) विद्या की वृद्धि (स्वयं विद्या प्राप्त करना, विवेक शील बनना, अपनी सन्तान को एवं अन्य लोगों को विद्यादान करना–कराना), (ख) परोपकार (शरीर और मन से उद्योग करना और धन से कारखाने आदि खोल कर अनेक लोगों की जीविका का प्रबंध करना), (ग) अनाथों का पालन (बालक, वृद्ध, या अंग–भंग हो जाने के कारण जो अपना पालन स्वयं नहीं कर सकते, उनका पालन) इस प्रकार करना ताकि वे जितना काम कर सकते हैं उतना अवश्य करें, आलसी निकम्मे न बनें), और (घ) अपने सम्बन्धियों की रक्षा जैसे कार्य सबको करने चाहिए।

सत्य असत्य का निर्णय : लोग अकसर कहते हैं कि सत्य क्या है, असत्य क्या है, इसका पता हम कैसे लगाएँ? महर्षि ने इसके पाँच साधन बताए हैं–

(1) ईश्वर, उसके गुण कर्म स्वभाव और वेद विद्या (जैसे, ईश्वर का गुण है कि वह निराकार है, सर्वव्यापक है, अन्तर्यामी है, फिर भी अगर कोई उसकी मूर्ति बनाता है तो यह ईश्वर के गुणों के विपरीत होने के कारण असत्य हुई)।

(2) सृष्टिक्रम (जैसे, कोई कहे कि बिना माता–पिता के संतान का जन्म हुआ, तो सृष्टिक्रम के विरुद्ध होने से यह असत्य है)।

(3) प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य अर्थात् इतिहास, अर्थापत्ति अर्थात् एक बात सुनकर दूसरी बात प्रसंग से जान लेना, संभव और अभाव)।

(4) आप्त अर्थात् सर्वहितैषी विद्वानों का आचार, उपदेश, ग्रन्थ और सिद्धांत (5) अपनी आत्मा की साक्षी, अनुकूलता, जिज्ञासा, पवित्रता और विज्ञान। जो इन परीक्षाओं पर खरा उतरे, उसे ही सत्य मानें।

पति–पत्नी का व्यवहार : पति–पत्नी को कोई ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जो एक दूसरे को पसन्द न हो। उनके बीच प्रेम और विश्वास का व्यवहार होना चाहिए। दोनों परस्पर एक दूसरे की सेवा करें। एक दूसरे की रुचि का ध्यान रखें। जब पति–पत्नी एक दूसरे से संतुष्ट होते हैं तभी परिवार में सुख शान्ति का वास होता है, परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ती है, धन–संपदा की प्राप्ति होती है, और संतान उत्तम बनती है। इसके लिए आवश्यक है कि दोनों ब्रह्मचर्य आश्रम में यथाविधि शिक्षा प्राप्त करें, युवा हो जाने पर ही विवाह करें, विवाह स्वयंवर विधि से करें, और गृहस्थाश्रम के आदर्शों का पालन करें।

मनुष्य के गुण : मनुष्य में कुछ ऐसे गुण हैं जो अन्य प्राणियों में नहीं पाए जाते। जैसे विद्यार्जन करना और उनके अनुरूप जीवन जीना मनुष्य की ही विशेषता है। इसी प्रकार जहाँ अन्य सब प्राणी बलवान से डरते हैं और निर्बल को सताते हैं, वहीं मनुष्य की विशेषता है कि वह निर्बल पर दया करता है और उनकी रक्षा करता है। उन्हें पीड़ा देने वाले अधर्मी बलवान से भी नहीं डरता। ऐसे गुणों के कारण ही मनुष्य को अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ माना जाता है। हर मनुष्य को ऐसे गुण अर्जित करने ही चाहिए।

सभा में व्यवहार : जब सभा आदि में जाएँ तो यह दृढ़ निश्चय करके जाएँ कि मैं सत्य के ही पक्ष में रहूँगा। सभा में दूसरों की बात ध्यान देकर सुनें। वह सत्य हो तो प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करें, असत्य हो तो खंडन करें। यदि कोई प्रतिज्ञा करनी हो तो ऐसी ही करें जो सत्य के अनुरूप हो, और उसे यथावत् पूरा करें। बड़ाई–छोटाई न गिनें। व्यर्थ बकबाद न करें। अभिमान न करें, अपने को बड़ा न मानें। उचित स्थान पर बैठें और ऐसे ढंग से बैठें–उठें जो किसी को बुरा न लगे। सज्जनों का संग करें और दुष्टों से अलग रहें। सर्वहित पर दृष्टि रखें।

सत्य व्यवहार : अकसर लोग कहते हैं कि क्रेता–विक्रेता के बीच व्यापार में, या हार–जीत के प्रसंग में जीत के लिए सच से काम नहीं चलता, झूठ का व्यवहार करना ही पड़ता है। पर महर्षि ने उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि व्यापार की बात हो या हार–जीत की, सच के व्यवहार से वह बिलकुल सुगम हो जाती है, जबकि झूठ के व्यवहार के परिणाम हमेशा कष्ट देने वाले होते हैं। इसी प्रकार राजा और प्रजा (शासक और शासित) के बीच सत्य का धर्मयुक्त व्यवहार होना चाहिए। राजा अपनी प्रजा को सन्तान के समान समझे, श्रेष्ठ लोगों की रक्षा करे, दुष्टों को यथायोग्य दण्ड दे, और प्रजा की सुख–सुविधा का पूरा ध्यान रखे। प्रजा अपने धर्मयुक्त व्यवहार से अपने कार्य सिद्ध करके यथाविधि 'कर' का भुगतान करे। राजा हो या प्रजा, जब वह केवल अपना–अपना हित सिद्ध करने की कोशिश करते हैं, तो फिर वे राजा–प्रजा के बजाय एक दूसरे के शत्रु, चोर, डाकू आदि कहलाते हैं।

इस प्रकार व्यवहार की छोटी–छोटी बातों की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करने के कारण यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

इन दिनों माता–पिता के पास अपने बच्चों को देने के लिए 'सुविधाएँ' तो हैं, पर 'समय' नहीं है। आवश्यकता यह है कि बच्चों को खिलौने, पैसे और नए–नए उत्पाद देने के साथ ही उन्हें वह समय दिया जाए जिसे अंग्रेजी में 'क्वालिटी टाइम' कहते हैं, ताकि उनकी छोटी–बड़ी हर बात पर ध्यान दिया जा सके। उन्हें अपनी सभ्यता, संस्कृति, और संस्कारों से अवगत कराया जा सके। उन्हें सामाजिकता का पाठ पढ़ाया जा सके, और नैतिकता की भी शिक्षा दी जा सके। हमारी परम्परा में इसे ही 'धर्म' कहा गया है। याद रखिए, दुनिया कितनी भी बदल जाए, बच्चों की पहली पाठशाला घर ही होती है, हाड़–मांस के पुतले में मनुष्यत्व की प्रतिष्ठा करने वाला घर ही होता है, व्यक्तित्व की सुदृढ़ आधारशिला बनाने वाला अपना घर ही होता है।

– पी/138, एम आई जी, पल्लवपुरम–2, मेरठ 250110, चलभाष– 09758184432

साभार – सत्यार्थ सौरभ (मासिक पत्रिका)

आर्य समाज शकरपुर के वरिष्ठ सदस्य

श्री अमृत भूषण खन्ना का निधन

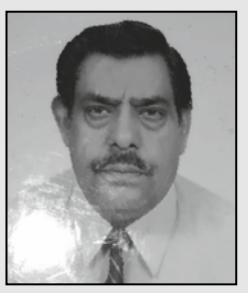

आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली के वरिष्ठ सदस्य श्री अमृत भूषण खन्ना जी का रविवार 10 फरवरी, 2019 को निधन हो गया। वे 75 वर्ष के थे। पिछले कुछ माह से वे अस्वस्थ चल रहे थे। इनके पुत्र श्री संजीव खन्ना तथा उनकी पत्नी ने कई बड़े अस्पतालों में उनका इलाज कराया लेकिन 10 फरवरी, 2019 को वे इस नश्वर शरीर को छोड़कर परमपिता परमात्मा की गोद में समा गये। श्री खन्ना जी अत्यन्त सौम्य स्वभाव व धार्मिक तथा दानी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आर्य समाज शकरपुर से उनको विशेष स्नेह था। उनके पूज्य पिता श्री नारायण दास खन्ना ने आर्य समाज शकरपुर की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया था तथा जीवन के अन्तिम समय तक वे आर्य समाज शकरपुर के प्रधान पद को सुशोभित करते रहे। श्री खन्ना जी अपने पीछे अपनी पत्नी तथा एक पुत्र एवं एक पुत्री (दोनों विवाहित) को छोड़ गये हैं। उनके पुत्र तथा पुत्री दोनों सी.ए. हैं और सुख समृद्धि से परिपूर्ण जीवन यापन कर रहे हैं।

उनकी अन्त्येष्टि 10 फरवरी, 2019 को ही गीता कालोनी श्मशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। दिनांक 13 फरवरी, 2019 को सायं 3 से 4 बजे तक श्री कृष्ण मंदिर, गणेशनगर–2 में उठाला रस्म सम्पन्न की गई। आर्य समाज शकरपुर के सभी पदाधिकारी तथा सदस्यगण श्री खन्ना जी की सद्गति के लिए तथा उनके परिवार को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

– पतराम त्यागी, मंत्री आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली–92

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं 'राजधर्म' के स्वर्ण जयन्ती समारोह के लिए निमंत्रण एवं अपील

आर्य महानुभावों! युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना संसार का उपकार करने के लिए की थी। आर्य समाज की स्थापना को 143 वर्ष हो चुके हैं। देश–विदेश में फैले हजारों आर्य समाज की इकाईयों एवं संस्थाओं से युक्त आर्य समाज विश्वभर में वैदिक संदेश को फैलाने के लिए कृत–संकल्प है। आर्य समाज के पास धर्मोपदेशकों, भजनीकों, प्रचारकों, वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों की एक सुदृढ़ तीव्रगामी और उत्साही मण्डली है। इसके पास मुद्राणालयों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की सशक्त प्रेस इकाई भी है। किन्तु इतना सबकुछ होते हुए भी आर्य समाज के संगठन में निष्क्रियता एवं निराशा हम सबके लिए चिन्ता का विषय बनी हुई है। आर्य समाज में युवा पीढ़ी का प्रवेश न के बराबर है। देश में सर्वाधिक जनसंख्या युवावर्ग की होने के बावजूद आर्य समाज में युवक बहुत कम आ रहे हैं। सन् 1967 में युवकों को आर्य समाज में दीक्षित करने के लिए आर्य समाज के महान संन्यासी युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' का गठन किया गया था तथा इसके शंखनाद के रूप में 'राजधर्म' नाम से पत्रिका का प्रकाशन भी शुरू किया गया था। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के आह्वान पर हजारों आर्य युवकों ने आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए आर्य समाज में प्रवेश भी किया। परिषद् के इस प्रयास से आर्य समाज में युवक क्रांति अभियान का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ जो आर्य समाज के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। परिषद् की स्थापना के 50 वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर हमने निश्चय किया है कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् तथा राजधर्म की 'स्वर्ण जयन्ती' का समारोह भव्यता के साथ आयोजित किया जाये। इस समारोह में जहाँ पिछले 50 वर्ष की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का लेखा–जोखा आर्य जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा वहीं तेजस्वी भावी कार्यक्रम की घोषणा भी की जायेगी। समारोह में जहाँ परिषद् की गतिविधियों की शानदार चित्र प्रदर्शनी लगेगी वहीं एक डाक्यूमेंटरी फिल्म भी तैयार की जायेगी। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् आर्य समाज का एक सशक्त युवा संगठन है तथा 'राजधर्म' पत्रिका आर्य राष्ट्र निर्माण का प्रबल प्रवक्ता एवं शंखनाद है। इन दोनों के स्वर्ण जयन्ती समारोह में देशभर से हजारों युवक एवं युवतियाँ एकत्रित होकर संकल्प लेंगे तथा आर्य समाज में नई पीढ़ी को सम्मिलित करने तथा निराशा के बादलों को चीरकर सक्रियता लाने के लिए एक नया युवक क्रांति अभियान प्रारम्भ करने की घोषणा करेंगे। हमारा प्रयास है कि कम से कम 50 युवक एवु युवतियाँ इस कार्य के लिए जीवन लगाने का संकल्प लेवें। समारोह में परिषद् के समस्त विशिष्ट सहयोगियों, जीवनदानी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, व्यायाम शिक्षकों एवं सम्पादकों को प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मानित किया जायेगा। किसी भी संस्था या व्यक्ति के जीवन में 50 वर्ष का समय बहुत महत्त्व रखता है। अतः इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में हम आपकी भागीदारी चाहते हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपने अन्य सभी आवश्यक कार्य छोड़कर समारोह में पधारें तथा इस युवक क्रांति अभियान के साक्षी बनें। यह आयोजन परिषद् के संस्थापक एवं युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी की स्मृति में निर्मित स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा में 9 व 10 मार्च, 2019 को भव्य तरीके से होने जा रहा है। 27 फरवरी, 2019 से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ प्रारम्भ होगा जिसकी पूर्णाहुति 9 मार्च, 2019 को प्रातः 9 बजे होगी। 10 मार्च, 2019 को स्वर्ण जयन्ती समारोह का मुख्य आयोजन प्रातः 10 से सायं 4 बजे तक होगा। आप सभी अभी से समारोह में आने की तैयारी शुरू कर दें और हमें अग्रिम सूचना देकर अवगत करायें कि आप कब और कितने साथियों के साथ पधार रहे हैं, ताकि आपके आवास एवं भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके। हमें पूरा विश्वास है कि आप सपरिवार एवं दल–बल सहित पधारकर समारोह को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इस विशाल आयोजन की विविध व्यवस्थाओं पर लाखों रुपये का व्यय होगा। आप अपने सामर्थ्य एवं सुविधा अनुसार आर्थिक सहयोग देकर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे। इस आशा और विश्वास के साथ निवेदन है कि आप अपना सहयोग 'स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन' के नाम से चैक/बैंक ड्राफ्ट/नकद देकर कर सकते हैं।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश
प्रधान

बिरजानन्द
महामंत्री

स्वर्ण जयन्ती समारोह

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

9416630916, 9354840454, 9468165946

Maharishi Dayanand's Enlightening

By- R.C. Bhardwaj 'Dhiman-Shri'

If we talk of Maharishi Dayanand in reference to his enlightening spirit, he stands first after Mahabharat. On this land of India no such enlightened personality took birth as Maharishi Dayanand, who did his best to glorify India, establishing the same style of life as in our past.

All the movements of Mahatma Gandhi's Philosohpy are mostly derived from what Maharshi Dayanand pleaded for. Whether it is a case of the regeneration of women or the uplift of down trodden.

He studied deeply about the essentials of Indian culture and civilization. The first and the foremost problem of the country Bharat was to solve by achieving independence. So he infused the spirit and enthusiasm in the people and created a national feeling of liberty. He wrote a historical book named the Satyarth Prakash, which really opened the eyes of the people and compelled them to fight against Britishers who were ruling and looting our country. Having studied this book many Youths felt themselves to be fired up with feelings of independence. Many of them had to lose their lives. This book is, really, a mile-stone, this book is an analysis of our culture. It is a High Powered Light-House. Through his mission of Arya Samaj, Maharshi enlightened the souls of the countrymen. Now after a span of century this arganization is a cosmopolitan one. Maharshi Dayanand has arroused the insight of the people.

He brought about the system of Trinity that is God, Spirit and Matter or Nautre. He had cured the people troubled by metaphysical misleadings and misunderstandings. He studied the Vedas and other Vedic concept provoking literature. He advocated that the Vedas are the speeches of God. They are eternal. The four Vedas (Rig., Yaj., Sam., & Ath.) came to light through The four rishis namely Agni, Vaayu, Aditya and Angira. All of these contain the material dealing with every branch of Science. He declared: 'The Vedic religion is a scientific religion.' It deals with devotion and logic.

He wrote many notable books as the Rigvedadi-Bhashya-Bhumkika, The Panch-Maha Yajya Vidhi, the Sanskar Vidhi, the Gau karuna- Nidhi etc. and translated the Yajurveda completely.

He pleaded for Hindi which he called 'Dev-Nagari'. His all translation-work was in that language. He declared- it may be our National Language.

Born in 1824 in Gujrat, he died in 1883 on the eve of Deepawali. Definitely, he kindled thousands and crores of the Humanly Lamps. No matter he left this world so early. So we are so unfortunate to be deprived of all treasure he had. We can never be excused. He was a grand enlightened one.

—Hapur (Gzb.)

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

महर्षि दयानन्द योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम, जीन्द में आयोजित

मासिक सत्संग को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया सम्बोधित

आश्रम के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी ने किया संयोजन

महर्षि दयानन्द योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम, अर्बन स्टेट, जीन्द में 10 फरवरी, 2019 को आयोजित मासिक सत्संग में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। वे यहाँ सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं 'राजधर्म' पत्रिका के 'स्वर्ण जयन्ती समारोह' की तैयारी के लिए बुलाई गई बैठक में भाग लेने आये हुए थे। बैठक से पूर्व सत्संग में लगभग एक घण्टे तक प्रवचन के द्वारा स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक मान्यताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने त्रैतवाद, कर्मफल, पुनर्जन्म, पंच महायज्ञ तथा सोलह संस्कार अष्टांग योग एवं आर्ष शिक्षा आदि मुख्य मान्यताओं पर विस्तार से विचार प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। स्वामी जी ने कहा कि धर्म के क्षेत्र में जिस प्रकार से अन्धविश्वास एवं पाखण्ड का बोलबाला बढ़ रहा है उससे मानव समाज की बहुत बड़ी हानि हो रही है। उन्होंने ईश्वर उपासना की विभिन्न पद्धतियों की चर्चा करते हुए एक निराकार ईश्वर की उपासना को सर्वोत्तम बताया। कर्मफल के सम्बन्ध में फैलाई गई भ्रांति कि 'कर्मों के फल माफ भी किये जा सकते हैं' पर चोट करते हुए स्वामी जी ने कहा कि किये हुए कर्मों का फल चाहे वे अच्छे हों या बुरे अवश्य ही भोगने पड़ते हैं। ईश्वर किये हुए कर्मों का फल निश्चित रूप से देता है। वह किसी भी सिफारिश या किसी भी प्रार्थना इस बात के लिए स्वीकार नहीं करता कि किये हुए कर्मों का फल माफ हो सके।

महर्षि दयानन्द योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा आश्रम में निरन्तर लगभग 10 वर्षों से मासिक सत्संग होता आ रहा है जिसमें प्रातः यज्ञ फिर भजन, प्रवचन और ऋषि लंगर की भी समुचित व्यवस्था की जाती है। इस मासिक सत्संग का संचालन आश्रम के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी की देखरेख में हो रहा है। स्वामी जी समय–समय पर आश्रम में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के शिविर भी आयोजित करते रहते हैं जिससे लोगों को विशेष लाभ पहुंचता रहता है। स्वामी आर्यवेश जी से पूर्व श्री देवराज शास्त्री जी का भी संक्षिप्त प्रवचन एवं श्री जोरा सिंह आर्य के मधुर गीत भी हुए।

सत्संग के उपरान्त कार्यकर्ताओं की बैठक 9 व 10 मार्च, 2019 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली में होने वाले स्वर्ण जयन्ती समारोह की तैयारी के सम्बन्ध में हुई। इस अवसर पर जीन्द से भारी संख्या में आर्य युवकों तथा आर्यजनों को समारोह में ले जाने की योजना बनाई गई। बैठक को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने संचालित किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।